सम्पादकीय
असुरता को हराना है तो सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, काली को जगाना होगा 2»

प्रगतिशील सोच से ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बने 5»

20 वर्षों में क्रान्तिकारी बदलाव

वर्षाजल संरक्षण के लिए करें तैयारी, विविध संरचनाएँ 6»

देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ श्रृंखला के लिए टोलियों की विदाई 8»

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 मार्च 2022

वर्ष : 34, अंक : 18
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 मार्च 2022
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

प्रसन्नता एक अनमोल धन

अपने पास दूसरों को देने के लिए धन-दौलत न हो, तो भी हम एक वस्तु सदा सबको देते रह सकते हैं और निरन्तर पुण्य लाभ व सन्तोष करते रह सकते हैं, उस वस्तु का नाम है- प्रसन्नता। यदि अपने स्वभाव में प्रसन्न रहने की, हँसने-मुस्कराने की आदत डाल ली जाए तो जहाँ कहीं भी रहेंगे वहीं प्रसन्नता बिखेरते रहेंगे। तब जो कोई भी अपने सम्पर्क में आएगा वह प्रसन्न और प्रभावित होता चला जाएगा। अपने आपकी संतुष्टि भी प्रसन्नता की मनोदशा पर निर्भर रहती है।

यह अनुमान सही नहीं है कि जो सुखी एवं साधन-सम्पन्न होता है, वह प्रसन्न रहता है। वस्तुस्थिति इससे बिलकुल उल्टी है। जो प्रसन्न रहता है, वह सुखी और साधन-सम्पन्न बनता है। प्रसन्नता विशुद्ध रूप से एक ऐसी मनोदशा है, जो पूर्णतया आन्तरिक सुसंस्कारों पर निर्भर रहती है। गरीबी में भी मुस्कराने और कठिनाइयों के बीच भी जी खोलकर हँसने वाले असंख्य व्यक्ति देखे जा सकते हैं। इसके विपरीत ऐसे भी अगणित लोग हैं, जिनके पास प्रचुर मात्रा में साधन-सम्पन्नता भरी पड़ी है, पर उनकी आँखें चढ़ी, तेवर तने और मुखाकृति इठी रहती है।

मनःस्थिति ठीक तो सब ठीक

क्रुद्ध, चिन्तित, असंतुष्ट और उद्विग्न रहना एक मानसिक दुर्बलता है, जो अन्तःकरण की दृष्टि से पिछड़े हुए लोगों में ही पाई जाती है। परिस्थितियाँ नहीं, मनोभूमि का पिछड़ापन ही इस क्षुब्धता का कारण है। उदात्त और संतुलित दृष्टिकोण वाले व्यक्ति हर परिस्थिति में हँसते-हँसाते रहते हैं। वे जानते हैं कि मानव जीवन सुविधाओं-असुविधाओं के, अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं के ताने-बाने से बुना है। संसार में अब तक एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जन्मा, जिसे केवल सुविधायें और अनुकूलताएँ ही मिली हों और अभाव एवं कठिनाइयों का सामना न करना पड़ा हो। ऐसा व्यक्ति भी संसार में नहीं है, जिसे केवल दुःख-दारिद्रय से ही पाला पड़ा हो ।

हर किसी के जीवन में कुछ अनुकूलतायें रहती हैं, कुछ प्रतिकूलतायें। प्रश्न इतना भर है कि कौन, किसको कितना महत्व देता है। जो अपनी प्रतिकूलताओं पर ही विचार करता रहेगा, उन्हीं की बाबत सोचेगा, उन्हें ही अधिक महत्व देगा, उसे प्रतीत होगा कि वह मात्र कठिनाइयों में ही घिरा हुआ है। अस्तु उसे दुःखी रहना पड़ेगा। वह अधिक सम्पन्न लोगों के साथ अपनी तुलना करेगा तो अपने दुर्भाग्य पर चिढ़ आयेगी। इस स्तर पर अपनी मनोभूमि जमा देने वाला व्यक्ति सदा क्षुब्ध ही दिखाई पड़ेगा। जब भी अवसर मिलेगा, वह अपनी व्यथा अथवा नाराजगी व्यक्त करते हुए अपनी मानसिक अस्त-व्यस्तता प्रकट कर रहा होगा।

(युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, अखण्ड ज्योति सितम्बर 69, पृष्ठ 57-58 से संकलित-सम्पादित)

इसके प्रतिकूल जिन्होंने अपनी अनुकूलताओं पर विचार करना आरम्भ किया और अपनी तुलना पिछड़े हुए लोगों के साथ करना आरम्भ की, उसे लगेगा हम करोड़ों में अच्छे हैं। हमारे पास जो है, उसके लिए भी लाखों-करोड़ों तरसते हैं। इस तथ्य को जो समझ लेगा वह अपने को सौभाग्यवान मानेगा और सन्तोष का बहुत बड़ा आधार प्राप्त कर लेगा।

सभी सुविधायें किसे मिली हैं? मनुष्य जीवन तो अनुकूलता, प्रतिकूलता के ताने-बाने से बुना गया है। यह तथ्य जिनकी समझ में आ गया, वे अपनी सुविधाओं पर ही विचार करेंगे, दूसरों के द्वारा किये हुए सद्व्यवहारों को ही स्मरण रखेंगे। संसार में बिखरी पड़ी शोभा और अनुकूलता को ही देखेंगे। ऐसी मनःस्थिति में उन्हें ऐसा बहुत कुछ मिलेगा, जिसके आधार पर हर घड़ी प्रसन्न और संतुष्ट रहा जा सके।

सदा शुभ ही सोचिए

प्रसन्नता एक ईश्वरीय वरदान है। और यह हर सुसंस्कृत मनोभूमि के व्यक्ति को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो सकता है। जिसे शुभ देखने की आदत है, वह प्रियदर्शी सर्वत्र आनन्द-मङ्गल ही देखेगा। वह ईश्वर की अनुकम्पा और लोगों की सद्भावना पर विश्वास रखेगा। ऐसी दशा में हँसने और हँसाने के लिए उसके पास बहुत कुछ होगा। किन्तु जिसे अशुभ चिन्तन की आदत है, दूसरों के दोष-दुर्गुण और अपने अभाव-अवरोध ढूँढ़ने की आदत है, जो इसी शोध में लगे रहते हैं और जो प्रतिकूलतायें दीखती हैं उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर सोचते हैं, उन्हें अपने चारों ओर केवल दुष्टता और विपन्नता ही दिखाई देती है। ऐसे लोगों को क्षुब्ध ही रहना पड़ेगा, वे असमंजस, खिन्नता और उद्विग्नता ही अनुभव करते रहेंगे। रोष उनकी वाणी से और असन्तोष उनकी आकृति से टपकता रहेगा, ऐसे व्यक्ति स्वयं दुःखी रहते हैं और अपने सम्पर्क में आने वाले दूसरों को दुःखी करते रहते हैं ।

मनुष्य जीवन की यह एक भारी विडम्बना है कि वह सृष्टि का मुकुटमणि और संसार के समस्त प्राणियों की तुलना में अधिक साधन सम्पन्न होते हुए भी अपने को दुर्भाग्य ग्रस्त माने और दुःखी रहे। यह एक विपन्नता ही है कि दूसरों की सद्भावना, सज्जनता और सहकारिता को भुलाकर कोई केवल दोष-दुर्गुणों को ही ढूँढ़ता रहे। कठिनाइयों को सोचे और सुविधाओं को भुला दे; लाभ की ओर ध्यान न दे और हानि की ही सोचता रहे; यह एकांगी मनोभूमि अर्धांग पक्षाघात के रोगी की तरह है, जिसका एक ओर का आधा शरीर तो काम करता है पर दूसरी ओर निर्बलता, रुग्णता और पीड़ा की स्थिति बनी रहती है। हम जितनी देर, जितनी बढ़ा-चढ़ाकर अपनी प्रतिकूलताओं के विषय में सोचेंगें, उसी अनुपात से अपने रोष और विक्षोभ को बढ़ा लेंगे। इसके प्रतिकूल अपने चिन्तन की धारा यदि उपलब्ध सुविधाओं और सद्भावनाओं की ओर प्रवाहित हो चले तो संतोष और उल्लास की अभीष्ट मात्रा उपलब्ध करने के लिये पर्याप्त आधार मिल जाएगा।

हमें क्रुद्ध, रुष्ट, असंतुष्ट और क्षुब्ध नहीं रहना चाहिये। इससे मस्तिष्क में अनेकों नई विकृतियाँ उत्पन्न होती और बढ़ती चली जाती हैं। आग जहाँ रहेगी, वहीं जलायेगी। असंतोष जहाँ रहेगा, वहीं विक्षोभ उत्पन्न करेगा और उससे सारा मानसिक ढाँचा लड़खड़ाने लगेगा। चिड़चिड़ा मनुष्य एक प्रकार का पागल ही है। दुःखी, निराश और चिन्तित रहने वाले को सनकी और मूर्खों की पंक्ति में बिठाया जाएगा। ऐसा व्यक्ति अपने ही दुर्गुण से अपने आपको जलाता-गलाता रहता है और अनेक शारीरिक, मानसिक रोगों से ग्रस्त होकर घोर अशान्ति की प्रेत-पिशाच जैसी उद्विग्न जिन्दगी जीता है। बुद्धिमान वे हैं जो सबसे अधिक ध्यान अपने मानसिक संतुलन पर देते हैं और सोचते हैं, जो नहीं मिला उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। इसके लिये दुःखी रहना तनिक भी आवश्यक नहीं।

मुस्कराते रहो

हँसते रहना एक दैवी गुण है, जिस पर अमीरों की सुविधायें निछावर की जा सकती हैं। हँसने की आदत मावत चित्त को हल्का बनाती है और शरीर को निरोगी-दीर्घजीवी एवं सुन्दर बनने की सुविधा उत्पन्न करती है। अपना सबसे बड़ा उपकार यही हो सकता है कि प्रसन्न रहने, मुस्कराने और हँसने की आदत को अपने स्वभाव का एक अङ्ग बना लें। यह व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने का बहुमूल्य गुण है। खिले हुए फूल के आस-पास जिस तरह तितलियाँ और मधु-मक्खियां घिरी रहती हैं, उसी प्रकार हँसते-हँसाते रहने वाले व्यक्ति से समीपवर्ती लोग अनायास ही आकर्षित और प्रभावित होते हैं।

प्रसन्नता की आवश्यकता सभी को है, हँसी का आनन्द हर कोई लेना चाहता है। मुस्कराहट के साथ बिखरने वाला सौन्दर्य हर किसी को भाता है। इस प्रकार की आकृति और प्रकृति जिस किसी की भी दिखाई पड़ती है, लोग उसकी ओर खिंचते चले आते हैं। मिठाई खरीदने वाले हलवाई की दुकान पर पहुँचते हैं। हर्ष और उल्लास की, प्रसन्नता और मुस्कान की भूख हर किसी को प्रसन्न चित्त मनुष्य के पास खींच कर ले आती है। उसके मित्रों, समर्थकों, प्रशंसकों और सहयोगियों की कमी नहीं रहती।

चन्दन अपने चारों ओर सुगन्ध और पुष्प अपने आसपास शोभा सौन्दर्य बखेरता है। हँसमुख और प्रसन्न चित्त मनुष्य भी अपने समीपवर्ती वातावरण में, परिवार और परिचितों में हर्ष-उल्लास की लहर उत्पन्न करता रहता है। संसार में दुःख बहुत हैं, दुःखियों की कमी नहीं। रोने और रुलाने वालों की भीड़ लगी है। चिढ़ने और चिढ़ाने वाले अगणित हैं। खोज उनकी है, जो हँसने और हँसाने की विभूतियाँ बखेरते हुए अपनी आन्तरिक समर्थता और मानसिक प्रौढ़ता का परिचय दे सकें। ऐसे ही लोग इस संसार में आनन्द की अभिवृद्धि कर सकते हैं। उन्हीं का अनुदान समीपवर्ती लोगों की हृदय कलिका को खिला सकता है। कठिनाइयाँ अपने पुरुषार्थ से हल होती हैं, पर दूसरों को उल्लास एवं उत्साह प्रदान कर हम किसी का भी चित्त हल्का कर सकते हैं और निराश जीवनों में आशा की नई किरणें बिखेर सकते हैं।

प्रसन्नता एक आदत है, जो कुछ समय के निरन्तर अभ्यास से अपने अन्दर उत्पन्न की जा सकती है। अपनी सुविधाओं को देखें और प्रसन्न रहें। शुभ और प्रिय देखें। उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करें, सदभावना और सत्प्रवृत्तियों का चिन्तन करें, हमें हँसने के लिए, प्रसन्न रहने के लिए बहुत कुछ मिलेगा। यदि हम हँसता और हँसाता जीवन जी सकें तो समझना चाहिये कि हमने एक सच्चे कलाकार के जैसी मङ्गलमयी सफलता एवं उल्लास भरी उपलब्धि प्राप्त कर ली।

असुरता को हराना है तो सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा, काली को जगाना होगा

देवियाँ देश की जाग जाएँ अगर, कुरीतियों का दम निकलता चला जाएगा

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं होली के संदर्भ में पठनीय आलेख

नारी जागरण की दिशाधारा

परम पूज्य गुरुदेव का उद्घोष-''इक्कीसवीं सदी, नारी सदी'' आज सर्वत्र चरितार्थ होता दिखाई दे रहा है। नारी हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। राष्ट्राध्यक्षों से लेकर अंतरिक्ष की ऊँचाईयों तक नारी शक्ति ने परचम लहराया है। 26 जनवरी को दिल्ली के राजपथ पर निकलती परेड में नारी को सैन्य टुकड़ियों का नेतृत्व करते देखकर निःसंदेह हर देशवासी का सीना चौड़ा हो जाता है। लेकिन वर्तमान युग के पतन-पराभव को दूर करने के लिए नारी जागरण के जिस स्वरूप की परिकल्पना परम पूज्य गुरुदेव ने की है, वह इतनी ही नहीं है। नारी की मौलिकताओं को विकसित किए बिना सही मायनों में नारी उत्कर्ष संभव नहीं है।

समाज में सुख-सम्पदा कितनी ही क्यों न बढ़ जाए, प्रगति के नाम पर मंगल और चाँद पर मानवीय बस्तियाँ क्यों न बन जाएँ, जब तक व्यक्ति की सोच नहीं बदलती और समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों, मूढ़ मान्यताओं से छुटकारा नहीं मिल जाता, तब तक मानवीय प्रगति के सारे प्रयास ऐसे ही हैं जैसे चलनी में दूध दुहना। अगले दिनों समाज का नेतृत्व नारी ही करेगी, इसलिए उसे परावलम्बी मानसिकता, आत्महीनता की भावना से उबारना और तमाम अविवेकपूर्ण अंधविश्वासों, मूढ़मान्यताओं तथा कुरीतियों से उबरना एवं उबारना ही होगा। पुरुष प्रधान समाज द्वारा थोपे गए अविवेकपूर्ण नियमों की पुनः समीक्षा कर उसे प्रगतिशील परम्पराओं के संग जीना सीखना-सिखाना होगा।

इन दिनों पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) के उपलक्ष्य में सभा-सम्मेलनों का आयोजन हो रहा है। होली (17 एवं 18 मार्च) पर नशा निवारण, अश्लीलता उन्मूलन के लिए पूरे देश में गायत्री परिवार की विशेष सक्रियता दिखाई देगी, लेकिन सबसे बड़ी आवश्यकता मातृशक्ति की सोच बदलने की है। हजारों वर्षों की दासता और पुरुष प्रधान समाज के दबदबे के कारण वह स्वयं को 'अबला' मान बैठी है, है नहीं। यदि विवेकपूर्वक आत्मविश्लेषण करे तो वह समझ सकेगी कि वह शकुंतला है, जो पति के साये के बिना भी अपने बेटे 'भरत' को बचपन से ही शेरों के दाँत गिनने वाला साहसी बालक बना सकती है। आगे चलकर उसे चक्रवर्ती सम्राट बना सकती है। नारी आत्मस्वरूप को पहचान सके तो झाँसी की रानी की तरह अपने नन्हें बालक को पीठ पर बाँधकर भी अंग्रेजी सेना से लोहा ले सकती है। वह मीरा की तरह राजपाट की दीवारें लाँघकर सद्भावों की, भक्तिभाव की सरिता बहा सकती है। माता यदि सीता की तरह जागरूक और प्रगतिशील विचारों वाली हो जाए तो लव-कुश जैसी संतानों को जन्म देने की परिस्थितियाँ भी बन ही जाती हैं।

वैचारिक परतंत्रता की बेड़ियाँ टूटें

इन दिनों की आवश्यकता मातृशक्ति में विवेकपूर्ण एवं प्रगतिशील सोच विकसित करने की है। वर्तमान समाज में नारी की 'अबला' वाली स्थिति का मुख्य कारण दकियानूसी सोच है। विचार शैली बदले तो नारी को उसकी मौलिक विशेषताओं से परिचित कराना और उन्हें विकसित करना आसान हो जाएगा। राजतंत्र एवं सामन्तवादी युग में नारी को आभूषणों की बेड़ियों से जकड़ कर और सजी-धजी गुड़िया की तरह पर्दों में बिठाकर रखा गया और उसे उपभोग की वस्तु मान लिया गया था। केवल पुरुष वर्ग में ही नहीं, बल्कि नारी वर्ग में भी इस सोच ने गहरी पैठ जमा ली है, जिसमें आज भी वह बुरी तरह जकड़ी हुई है। इस मानसिकता से मुक्त कराए बिना नारी को उसकी सृजनशीलता और वास्तविक शक्तियों से परिचित कराना कठिन है।

आज अधिकांश नारियाँ चुपचाप सबकुछ सहती और परंपराओं को ढोती दिखाई देती हैं। सच पूछा जाये तो मूढ़ मान्यताओं, कुरीतियों और अंध विश्वासों से वे इतनी अधिक जकड़ गई हैं कि अब उनकी सहमति के बिना बड़े-बुजुर्गों के आज्ञानुवर्ती प्रगतिशील विचारधारा के पुरुषों को भी उनसे मुक्ति पाना कठिन लग रहा है। इस सोच के विषय में परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-

''जो देश (भारत) कभी अपने स्वतंत्र, प्रखर एवं दूरदर्शी चिन्तन के कारण अध्यात्म तत्व-दर्शन का अन्वेषक माना जाता था, वही अन्धविश्वासों, कुरीतियों, मूढ़-मान्यताओं तथा कुपरम्पराओं का केन्द्र माना जाने लगा। हजार वर्ष की अवधि में कितने ही चित्र-विचित्र प्रचलन चल पड़े, जिन्हें विवेक की कसौटी पर कसने पर हँसी आती है। जाति-पाँति, छुआछूत, ऊँच-नीच की मान्यता के कारण समय-समय पर हिन्दू समुदाय का एक बड़ा वर्ग कटकर अलग होता रहा है।'' (वाङ्मय 59, पृष्ठ-1.1)

इसी वाङ्मय में परम पूज्य गुरुदेव ने नारी की व्यथा-वेदना को पृष्ठ 1.5 पर निम्न शब्दों में व्यक्त किया है- *''भारतीय नारी समाज की स्थिति भी दयनीय है। उसे घर की चहारदीवारी में, पर्दे में इस प्रकार कैद किया गया है कि वह मानवोचित जीवन बिताना, परिवार की उन्नति में सुख, समृद्धि में सहायक होना तो दूर, उलटे परावलम्बी होने के कारण वह अपने और दूसरों के लिए भार रूप होती है। पिता के लिए वह भार रूप, पति उसे बिना दहेज लिए मरी बछिया की तरह स्वीकार करने को तैयार नहीं, विधवा हो जाने के बाद किसी को फूटी आँख से नहीं सुहाती। नारी सबके लिए भार रूप है। कई छोटे बच्चे छोड़कर जब निर्धन पति मरता है तो उस विधवा की क्या दुर्दशा होती है, उसे देखकर पत्थर के कलेजे भी पिघल पड़ते हैं। इस दयनीय दशा से नारी की स्थिति में कुछ सुधार करना होगा। उसे इतना अवसर जरूर दिलाना होगा, उसमें इतनी योग्यता और शक्ति अवश्य उत्पन्न करनी होगी कि वह किसी के लिए भार रूप न रहे, मुसीबत के वक्त अपने पैरों पर खड़ी हो सके और अपनी क्षमता के आधार पर घर के लिए एक अच्छी सहायिका सिद्ध हो सके।''*

नारी की गौरव-गरिमा

वस्तुतः सबल, सशक्त, जाग्रत् नारी न केवल आत्मसम्मानपूर्वक जीवन जी सकती है, अपितु अपनी प्रगतिशील विचारधारा के साथ समाज के उत्थान में भी बहुत बड़ा योगदान दे सकती है। यदि वह अपनी वास्तविक सामर्थ्य को पहचान ले तो वही सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा और काली के रूप में तमाम अवांछनीयताओं को निरस्त कर सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। आखिर परिवार को संस्कार देने और बच्चे के निर्माण का दायित्व नारी ही तो वहन करती है।

नारी भोग्या नहीं है, वह सृजेता है, पालक-पोषक है और आवश्यकता पड़ने पर अवांछनीयताओं को चुनौती देने में समर्थ संहारक भी है। नारी 'सरस्वती' है जो अपनी कलात्मकता से समाज में संवेदना, सद्भाव, समरसता, सहकार, साहस जैसे सद्गुण जगाती है। 'लक्ष्मी' रूप में वह परिवार और समाज का पालन-पोषण करती है। वह 'दुर्गा' का रूप धारण कर अविवेकपूर्ण अवांछनीयताओं को चुनौती देती है। असुरता के विध्वंस के बाद जब महाकाल सो जाते हैं तब सृजन की देवी महाकाली का महत्त्व बढ़ जाता है। महाकाल की छाती पर खड़े होकर महाकाली का अट्टहास करना इसी तथ्य का अलंकारिक चित्रण है।

आवश्यकता आज की नारी के द्वारा सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा व काली वाले वास्तविक स्वरूप को जानने और दृढ़ विश्वास के साथ उन भूमिकाओं को निभाने की है। जिस दिन नारी जाग जाएगी, उस दिन समाज का स्वरूप ही बदल जाएगा। तब वह व्यसन, फैशन, फिजूलखर्ची, अश्लीलता जैसी न जाने कितनी अवांछनीयताओं से स्वतः ही मुक्त होती चली जाएगी। लेकिन शिक्षित, गुणवान, स्वावलम्बी नारी ही इस दिशा में साहसी एवं प्रभावशाली प्रयास कर सकती है। इस स्तर तक उसे विकसित करने में उसे सदाशयी पुरुषों के सहयोग की भी प्रबल आवश्यकता होगी।

नारी का सच्चा स्वरूप वह है जो वासना नहीं, वात्सल्य के भाव को विकसित करे। जिसके व्यक्तित्व में मादकता नहीं, ममता झलके और कामुकता की बजाये करुणा के भाव पनपते हों। प्रलोभन नहीं, प्यार की प्रेरणा दे सके, ऐसी देवियाँ ही सही मायनों में परम पूज्य गुरुदेव के 'इक्कीसवीं सदी नारी सदी' तथा 'इक्कीसवीं सदी, उज्ज्वल भविष्य' के उद्घोष को चरितार्थ कर सकेंगी। नारी के चरित्र, चिन्तन और व्यवहार में इस प्रकार का परिवर्तन होने लगे तो फिर वह विज्ञापन की वस्तु नहीं रह जाएगी। तब अश्लीलता की होली नहीं जलानी पड़ेगी। युवा पीढ़ी उसका वात्सल्य पाकर सद्गुणी और संस्कारवान ही बनेगी।

प्रयास तो करने ही होंगे

माना कि वर्तमान भौतिकवादी युग में यह विचार परिवर्तन सरल नहीं है, लेकिन इस परिवर्तन के बिना कोई चारा भी तो नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस एक अभियान में पूरे समाज की दिशा और दशा को बदलने की सामर्थ्य विद्यमान है। आवश्यकता आत्मविश्वास जगाने की, सहयोग और समर्थन देने की है। गायत्री परिवार में ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जिनमें पहले पति और परिवारीजनों ने बहिनों के गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में जाने की उपेक्षा की, लेकिन बहिनों की नियमित गायत्री उपासना, बलिवैश्व और सृजनात्मक सक्रियता से पूरा परिवार गायत्रीमय हो गया। जो परिवार जुड़े उनका वातावरण बदल गया।

प्रयास किया जाए तो घर-परिवार में ऐसा वातावरण तो बनाया ही जा सकता है, जिसमें परम्पराओं को ढोने की बजाये विवेकपूर्वक सोचने और सही को ही अपनाने का प्रचलन बढ़े। समाज तो आलोचना करता ही रहेगा। हर सुधारवादी प्रयासों की आलोचना होती ही है। सत्कार्यों की ओर बढ़ते साहसी कदमों में अवरोध आते ही हैं। आज भगतसिंह की प्रशंसा सब करते हैं, लेकिन ऐसा तो नहीं हो सकता कि अपने समय में उनके क्रान्तिकारी कार्यों को सारे समाज का समर्थन मिला होगा। समझदारी तो साहसपूर्वक सोचने और जो सही व श्रेष्ठ है, उसी को अपनाने में है।

जिस दिन नारी अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेगी और अवांछनीयताओं को अपनाने से इन्कार कर देगी, उस दिन समाज का स्वरूप ही कुछ और होगा। समाज में नशे का प्रचलन इसलिए अधिक है कि घर की देवी चुपचाप सब सह रही है। पहले ही कहा जा चुका है कि गायत्री उपासना से हजारों परिवारों का वातावरण बदला है। देखा यह भी गया है कि जिस क्षेत्र की महिलाएँ संगठित होकर नशे के खिलाफ तन कर खड़ी हो गईं, वहाँ के मर्दों को उनके सामने घुटने टेकने पड़े। एकदम सबकुछ नहीं बदल जाता, लेकिन सदाशयता एवं विवेकपूर्वक प्रयासों को आज नहीं तो कल सफलता मिलती ही है।

घर के बड़े सदस्य जैसा आचरण करेंगे वैसा ही तो अनुसरण बच्चे भी करेंगे। मौज-शौक और फैशन परस्ती पर ही ध्यान न देकर पूरे परिवार के निर्माण का दायित्व भी बहिनें समझें। मातृशक्ति चाहे और अवांछनीयताओं के विरुद्ध तन कर खड़ी हो जाए तो नशा, अश्लीलता, वैवाहिक कुरीतियों, मृतकभोज, बलिप्रथा, बहुप्रजनन, टोने-टोटके जैसी अनेक कुप्रथाओं से समाज को छुटकारा मिल सकता है। निःसंदेह आज नारी शक्ति समाज के हर क्षेत्र में शानदार प्रगति कर रही है, लेकिन सभ्य, सशक्त, सुखी, समृद्ध समाज एवं राष्ट्र के निर्माण के लिए सर्वोपरि आवश्यकता नारी के मौलिक गुणों के विकास की है।

असुरता-अवांछनीयता पर सत्य, प्रेम, न्याय की विजय का पर्व 'होली' नारी जागरण एवं नारी सशक्तीकरण के सत्प्रयासों को प्रोत्साहित करने एवं सहयोग देने का पर्व है। हम क्या कर सकते हैं, सुनिश्चित करें और उस दिशा में सार्थक कदम बढ़ायें।

पीड़ित मानवता की सेवा और संस्कार परम्परा को प्रोत्साहन

थाना प्रभारी ने की रक्तदान की पहल

प्रेरणा पाकर कई पुलिसकर्मियों ने भी किया रक्तदान

केवलारी, सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केवलारी पर 27 जनवरी को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। युवा प्रकोष्ठ गायत्री परिवार केवलारी एवं कामधेनु गौशाला बगलई केवलारी के संयुक्त प्रयास से आयोजित इस शिविर में कुल 76 लोगों ने रक्तदान किया।

शिविर का शुभारंभ थाना प्रभारी नगर निरीक्षक द्वारा दीप प्रज्वलन, देवपूजन के साथ किया गया। उन्होंने स्वयं सेवा भावना का आदर्श प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम रक्तदान किया। उनकी प्रेरणा से पुलिस विभाग के कई लोगों ने भी रक्तदान किया। जिला ब्लड बैंक से आई मेडिकल टीम ने इस शिविर के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं। शक्तिपीठ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री सुरेन्द्र छोटू साहू एवं श्री श्री शिवराज राहंगडाले ने समस्त रक्तदाताओं एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

76 यूनिट रक्तदान हुआ

10 गायत्री परिवार केवलारी में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयन्ती पर रक्तदान शिविर की यह परम्परा पिछले 10 वर्षों से चल रही है।

नीचे रक्तदाताओं को प्रमाणपत्र देते थाना प्रभारी

कोरोना संक्रमण काल में किए गए रक्तदान के लिए जिला चिकित्सालय से मिला सम्मान

बैतूल। मध्य प्रदेश

जिला चिकित्सालय बैतूल ने एक सम्मान समारोह आयोजित कर जिले की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा कोरोना काल में आयोजित किए गए रक्तदान शिविर के आयोजकों एवं व्यक्तिगत रक्तदातों को सम्मानित किया। जिला रक्तकोष प्रभारी डॉ. अंकिता सिते ने गायत्री परिवार के जिला समन्वयक डॉ. कैलाश वर्मा तथा गायत्री परिवार बैतूल, बैतूल बाजार, मुलताई, साईंखेड़ा, सोनोरा, भीमपुर, आमला, नवापुर के रक्तदान प्रभारियों की टीम को सम्मानित किया। इस कार्यक्रम को डॉ. सिते के अलावा डॉ. नागले, मुख्य अतिथि रक्तकोष की डायरेक्टर जाट, भोपाल ने संबोधित किया। गायत्री परिवार की ओर से संपतराव धोटे, डॉ. रामदास गड़ेकर, संगठन एवं विभिन्न आन्दोलनों के प्रभारी अजय पंवार, अनूप वर्मा, अमोल पानकर, आशीष पटैया आदि अनेक स्वयंसेवक उपस्थित थे।

1000 गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ द्वारा जिला समन्वय समिति के मार्गदर्शन में जिले के विभिन्न स्थानों पर शिविर आयोजित कर लगभग 1000 यूनिट रक्तदान किया गया।

सम्मान पत्र ग्रहण करते गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि

आदर्शों के प्रति अटूट निष्ठा का परिचय दिया

मृतक भोज नहीं, प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया

कठूमर, अलवर। राजस्थान

तहसील कठूमर के गाँव बींजला के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री नरेश सिंह सिनसिनवार ने अपनी पूज्यनीया माताजी (80 वर्ष) के निधन पर गायत्री परिवार की आदर्श परम्पराओं का पालन करते हुए मृतक भोज नहीं दिया, उसके स्थान पर पावन प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन कराया। पं. श्यामसुन्दर शर्मा, श्री बहादुर सिंह, नारायण सिंह की टोली ने सरस संगीतमय प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से पूरे समाज को पीड़ा-पतन निवारण, परिवार निर्माण, राष्ट्र निर्माण की अत्यंत मार्मिक प्रेरणाएँ प्रदान कीं।

श्री नरेश सिंह का पूरा परिवार मिशन के लिए समर्पित है। क्षेत्र में गायत्री परिवार से जुड़े सैकड़ों लोगों ने मृतकभोज में शामिल न होने तथा अपने परिवार में मृतकभोज न करने का संकल्प लिया हुआ है।

नारी स्वावलम्बन के लिए सिलाई प्रशिक्षण

प्रशिक्षित बहिनों को निःशुल्क सिलाई मशीन भी दी जाती है

बड़ीसाखथली, प्रतापगढ़। राजस्थान

चेतना केन्द्र ग्राम बड़ी साखथली ने स्थानीय जरूरतमंद बहिनों के लाभार्थ निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण देना आरम्भ किया है। श्रीमती कैलाश कुंवर राणावत इस प्रशिक्षण केन्द्र का संचालन कर रही हैं। विधवा, गरीब वर्ग की 11 महिलाएँ इसका लाभ ले रही हैं। केन्द्र कार्यवाहक श्री कुलदीप सिंह राणावत ने बताया कि उनकी शाखा द्वारा प्रशिक्षित बहिनों को स्वावलम्बी बनाने के लिए निःशुल्क सिलाई मशीनें भी प्रदान की जा रही हैं।

चेतना केन्द्र बड़ी साखथली में सिलाई सीखतीं जरूरतमंद बहिनें

निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर, 51 पीड़ित लाभान्वित हुए

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा गायत्री शक्तिपीठ कुड़वार नाका पर निःशुल्क कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें ऐसे लोगों के कृत्रिम हाथ या पैर बनाने के लिए नाप लिए गए, जिनके हाथ-पैर किसी कारण वश कट गए थे। भारत विकास परिषद लुधियाना से आयी हुई टीम ने उनके नाप लिए, जिसके आधार पर कृत्रिम हाथ-पैर बनाकर उन्हें दिए जाएँगे।

जिला समन्यवक डॉ. सुधाकर सिंह ने बताया कि यह शिविर श्री रमेश दुबे जी के विशेष सहयोग से आयोजित किया गया था। विभिन्न क्षेत्रों से आए कुल 51 लोग लाभान्वित हुए। शिविर के आयोजन में सर्वश्री कैलाश नारायण तिवारी, धर्मेन्द्र जी, हेमंत यादव, डॉ. सन्दीप चौरसिया, डॉ. नीलम, प्रभाकर सक्सेना, नीरज, रितेश, पंकज, सोनू सिंह, गुड्डू सिंह, सरजु प्रसाद वानप्रस्थी, सद्ज्ञान, मृत्युंजय, आशीष अग्रहरि, विजय, अभिषेक आदि का प्रशंसनीय सहयोग मिला।

आँखों के 157 मरीजों का निःशुल्क उपचार, 37 के ऑपरेशन हुए

अबडासा, कच्छ-भुज। गुजरात

तहसील अबडासा के ग्राम सांधाण में स्थानीय गायत्री परिवार ने के.सी. आर. अंधजन मण्डल भुज, भानुशाली महाजन सांधाण, लोहाणा महाजन सांधाण एवं गायत्री परिवार नलिया के सहयोग से निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। 157 मरीजों ने इसका लाभ लिया। विविध रोगों वाले 37 मरीजों का ऑपरेशन किया गया। सभी मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ भी प्रदान की गईं।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

गर्भ संस्कार मनोवैज्ञानिक शिक्षण है इसे हर वर्ग के लोग कराएँ - नीति श्रीवास्तव

देवास। मध्य प्रदेश

देवास में आँगनवाड़ी केंद्र क्रमांक 05 में गायत्री परिवार के सहयोग से सामूहिक पुंसवन संस्कार का कार्यक्रम बड़ी उमंग और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। नीति श्रीवास्तव और सरिता पाटीदार ने पूरे यज्ञीय विधि-विधान के साथ यह संस्कार सम्पन्न कराते हुए समाज के हर वर्ग की गर्भवती बहिनों से पुंसवन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह मात्र धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं, एक वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक शिक्षण है जो गर्भिणी को उसका खान-पान, रहन-सहन, सोच-विचार कैसा होना चाहिए, इसकी शिक्षा देता है।

नीति श्रीवास्तव ने कहा कि हर जाति, धर्म, वर्ग के नर-नारी को श्रेष्ठ, संस्कारवान, सद्गुणी संतान की चाह है। चूँकि शिशु का अधिकांश विकास गर्भ में और बालपन में ही हो जाता है, इसलिए माता-पिता जैसी सद्गुणी संतान चाहते हैं उसके अनुरूप गर्भकाल में ही उन्हें और पूरे परिवार को ढलना होगा। यह एक सार्वभौम शिक्षण है, अतः हर वर्ग की गर्भवती बहिनों को गर्भ संस्कार अवश्य कराना चाहिए।

गर्भ संस्कार महोत्सव में आए परियोजना अधिकारी श्री मोहनलाल अहिरवार ने गायत्री परिवार के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों को सभी केन्द्रों पर करने के प्रयास करने का आश्वासन दिया। आंगनवाड़ी सुपरवाईजर सुषमा ताइडे, सहायिका सोनाली अमूलखराटें, कार्यकर्त्ता प्रेमलता देवड़ा, शकुंतला शर्मा, सुशीला निहाले का विशेष सहयोग रहा।

गर्भ संस्कार कर्मकांड संचालन गायत्री परिवार के महेश आचार्य और चन्द्रिका शर्मा ने किया। गर्भ संस्कार कराने वाली बहिनों को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तकें और वेदमाता गायत्री का फोटो भेंट किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ देवास पर पुंसवन संस्कार कराती बहिनें

आशा बहिनों के सहयोग से 75 बहिनों का सामूहिक गर्भ संस्कार

मनकापुर, गोण्डा। उत्तर प्रदेश

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मनकापुर पर स्थानीय चिकित्सा अधिकारी एवं 30 आशा बहिनों के सहयोग से दिनांक 9 फरवरी को सामूहिक पुंसवन संस्कार का आयोजन हुआ। 75 से अधिक गर्भवती बहिनों ने अपने परिवारी जनों की उपस्थिति में गर्भ संस्कार कराया। सुश्री गायत्री वर्मा स.अ., योग, अवध यूनिवर्सिटी अयोध्या, एड. श्रीमती माधुरी तिवारी एवं श्रीमती कंचन वर्मा ने गर्भस्थ शिशु में स्वास्थ्य, संस्कार एवं श्रेष्ठ विचारों के पोषण के लिए मार्मिक मार्गदर्शन किया। संस्कार कराने वाली बहिनों और उनके परिजनों ने उन्हें हृदयंगम करते हुए जीवन शैली में शामिल करने के संकल्प लिए।

‘दिया राजस्थान’ की आत्मीयता विस्तार कार्यशाला एवं सेवा-सक्रियता

सलूम्बर, उदयपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ सलूंबर पर दिनांक 13 फरवरी को ‘दिया उदयपुर’ उपजोन कार्यालय का लोकार्पण हुआ। इसके साथ ही वहाँ एक दिवसीय आत्मीयता विस्तार कार्यशाला का आयोजन भी किया गया था। इस कार्यक्रम में युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती एवं जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए भावी सक्रियता सम्बन्धी मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार संवेदना, सद्भावना, सेवा, सक्रियता का पर्याय है। आज समाज स्वार्थी तत्त्वों के कारण कट और बँट रहा है। दिया के सदस्यों को एक सिपाही जैसी तन्मयता, तत्परता के साथ गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचना है और अपनी सृजनात्मक सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत करते हुए भूले-भटके समाज का पथ प्रदर्शन करना है।

दिया के प्रांतीय प्रभारी श्री विवेक विजय ने दीया की उपादेयता एवं संभावनाएँ समझाईं। ‘दिया सलूम्बर’ की नवगठित कार्यकारिणी के सदस्यों

उपजोन केन्द्र : शक्तिपीठ सलूम्बर में उपजोन कार्यालय का लोकार्पण हुआ।

गाँव गोद लिया : इस सम्मेलन में करेली गाँव व राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेमाल को गोद लेकर मिशन के रचनात्मक आन्दोलनों को क्रियान्वित करते हुए उनके आदर्श विकास का संकल्प लिया गया।

का माल्यार्पण कर सम्मान किया गया। इस सम्मेलन में ‘दिया राजस्थान’ की प्रान्तीय इकाई के सदस्य सर्वश्री रमेश छंगानी, कोटा से लोकेश जी, भूपेंद्र जी, बाराँ से मुकेश मीणा, प्रतापगढ़ से डॉ. वेदप्रकाश, चित्तौड़गढ़ से शांतिलाल जाट, जोधपुर से शुभम पांडे, मनीषा लश्करी, गायत्री परिवार सलूंबर के परमानंद जी मेहता एवं हेमंत भट्ट की गरिमामय उपस्थिति रही। शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री हेमंत भट्ट ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

रक्तदान शिविर, वृक्षारोपण, दीपयज्ञ

13 फरवरी को दिव्य भारत युवा संघ (दिया) और उदयपुर के शिखरेश्वर महादेव मंदिर समिति द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। युवाओं के साथ महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर सहयोग किया। कुल 30 यूनिट रक्तदान हुआ। दिया उदयपुर से प्रणय त्रिपाठी, चयन त्रिपाठी, परमेश पांडे, हेमांग जोशी, मंगल शर्मा, यश असावा, रेखा असावा, हर्षिता पंचोली, आदित्य कुमार, अशोक जैन ने शिविर के आयोजन में अपना अमूल्य योगदान दिया।

सायंकाल शिखरेश्वर महादेव मंदिर पर सदवाक्य लेखन, वृक्षारोपण एवं दीपयज्ञ का कार्यक्रम रखा गया था। सर्वप्रथम आशीष जी और अन्य माननीय अतिथियों ने पौधारोपण किया। बाल संस्कार शाला के बच्चों एवं उनके अभिभावकों ने भी पौधारोपण किया। तत्पश्चात् आयोजित 108 वेदीय दीपयज्ञ में मंदिर के आसपास के लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर केन्द्रीय प्रतिनिधि ने संस्कारों की महत्ता समझाई। आदेश जी ने बाल संस्कार शाला और उसमें होने वाली गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

साहित्य पटल का शुभारम्भ

14 फरवरी को श्री आशीष सिंह द्वारा उदयपुर जिले की एक तहसील बड़गाँव में श्री सत्यनारायण जोशी के निवास स्थान पर युग साहित्य विस्तार पटल और ज्ञान रथ का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर शक्तिपीठ उदयपुर की मार्गदर्शिका श्रीमती फतह कंवर सनाढ्य, श्री विनोद जी पांडे, श्री रमेश असावा, देवेन्द्र जोशी, व दिया उदयपुर के कार्यकर्ता चयन त्रिपाठी, आदित्य कुमार और विशाल जोशी आदि उपस्थित थे।

महाविद्यालय में उद्बोधन

बलीचा स्थित इंडो अमेरिकन इंस्टिट्यूट में बी.एड. के छात्र अध्यापकों के बीच ‘व्यक्तित्व परिष्कार’ विषय पर श्री आशीष सिंह का उद्बोधन हुआ। उन्होंने छात्रों को शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक एवं भावनात्मक रूप से स्वस्थ-सबल रहने के ऋषि प्रणीत बहुमूल्य सूत्र दिए। इससे पूर्व महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. आदेश भटनागर ने आशीष जी का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने छात्रों से किसी और से अपनी तुलना करने की अपेक्षा अपनी विशिष्टता को पहचानने और उसे विकसित करने की प्रेरणा दी। महाविद्यालय के छात्रों ने शान्तिकुञ्ज के सुझावों का बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया और उन्हें अपनाने के लिए उत्सुक दिखाई दिए। सभी कार्यक्रमों का संयोजन दिया राजस्थान समन्वयक शिवसुत राव जी ने किया।

प्रगतिशील सोच से हुए क्रान्तिकारी परिवर्तन

पवनचक्की और सौर ऊर्जा ईश्वर द्वारा प्रदत्त अक्षय ऊर्जा का भण्डार हैं जिनका पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इनसे वायु प्रदूषण और कार्बन डाइऑक्साइड पैदा किए बिना बिजली पैदा की जा सकती है। ऐसे समय में जब दिल्ली और बेंगलुरु जैसे बड़े-बड़े शहर भी बिजली कटौती से पीड़ित हैं और 24x7 बिजली आपूर्ति के लिए सरकार पर निर्भर हैं, वहीं ओडनथुरई ग्राम पंचायत और बांचा गाँव के ये उदाहरण अत्यंत प्रेरणादायक हैं।

श्री आर. शणमुगम

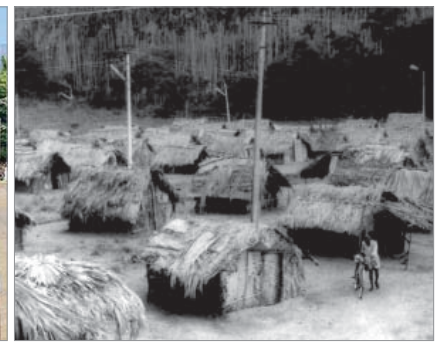

ओडनथुरई गाँव बायें 20 वर्ष पूर्व और दायें आज की स्थिति में

पवन ऊर्जा से आत्मनिर्भर बने

गाँव को हर वर्ष हो रही है रु. 20 लाख की कमाई

तमिलनाडु में कोयम्बटूर जिले के एक गाँव ओडनथुरै के किसान आर. शणमुगम ने सन् 1996 में पंचायत चुनाव जीता। गाँव की दशा उन दिनों बहुत अच्छी नहीं थी। बचपन में उन्होंने जब से पवनचक्की के बारे में पढ़ा था, तब से उनके मन में उनके गाँव में यह प्रोजेक्ट लगाने की इच्छा थी। सरपंच बनने के बाद इस दिशा में पहल करते हुए गाँव में एक सामुदायिक पवनचक्की स्थापित करने की योजना बनाई। इसके लिये उन्होंने तत्कालीन सरकारी योजनाओं का लाभ लिया। प्रगतिशील सोच के साथ किए गए इस बदलाव से आज पूरी पंचायत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए आत्मनिर्भर हो गई है। इतना ही नहीं, यह पंचायत प्रति वर्ष सरकार को बिजली बेचकर हर वर्ष औसतन 20 लाख रुपये कमाती है। इस पैसे से पंचायत ने 2005 तक 1.5 करोड़ रुपये का बैंक ऋण चुकाया, जिसे उसने 1996 में पवनचक्की संयंत्र स्थापित करने में लिया था।

सरपंच की दो महत्वपूर्ण सीख

पंचायत प्रमुख श्री आर. शणमुगम बताते हैं कि पहले पंचायत में पेयजल, सड़क संपर्क, स्ट्रीट लाइट, स्वच्छता और आवास जैसी बुनियादी सुविधाएँ गायब थीं। बेशक, एक मूल निवासी के रूप में, मैं इन समस्याओं को जानता था और अक्सर सरकार की उदासीनता के बारे में शिकायत करता था। लेकिन जब मैं टेबल के इस तरफ आया तो मैंने समस्याओं को बेहतर ढंग से समझा। इन प्रयोगों ने मुझे दो महत्वपूर्ण बातें सिखाईं। पहली बात सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली बिजली को स्टैंड-बाय विकल्प के रूप में उपयोग करना और दूसरी, पैसा न केवल बचाया जा सकता है, बल्कि स्वस्थ्य विकल्पों से उत्पन्न भी किया जा सकता है।

आज हमारा 350 किलोवॉट का संयंत्र प्रति वर्ष लगभग छह लाख यूनिट बिजली का उत्पादन करता है, जिसमें से 2 लाख यूनिट तमिलनाडु बिजली बोर्ड (TNEB) को बेची जाती है और बाकी बिजली मुख्य रूप से पंचायत की स्ट्रीट लाइट और पेयजल पंपिंग आदि कार्यों के लिए उपयोग की जाती है। गाँव के हर घर में एक मेगावाट सौर ऊर्जा के सोलर पैनल भी लगाये गये हैं।

स्मार्ट गाँव ओडनथुरई

- 20 वर्ष पूर्व का पिछड़ा हुआ गाँव आज देश-विदेश में स्मार्ट गाँव के नाम से जाना जाता है।
- बिजली व पेयजल की सभी जरूरतों के लिए आत्मनिर्भर बना। हर घर में 24 X 7 बिजली पानी की सुविधा है।
- ग्राम पंचायत ने अपने अधीन सभी निवासियों के लिए पक्के आवास की व्यवस्था की।

हर घर में लगे सौर ऊर्जा संचालित चूल्हे

बदल गया गाँव की महिलाओं और बच्चों का जीवन

मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में बांचा एक ऐसा गाँव है, जहाँ लोग खाना पकाने के लिए सौर ऊर्जा से संचालित चूल्हों का उपयोग कर रहे हैं। चार वर्ष पहले तक इस गाँव के लोग आसपास के क्षेत्र से लकड़ियाँ इकट्ठा करके खाना पकाने के लिए इस्तेमाल करते थे, किंतु अब इस गाँव में हर घर में सौर चूल्हे स्थापित हो गए हैं और घर की गृहणियाँ इन्हीं धूम्र रहित चूल्हों पर ही खाना बनाते हुए जीवन में एक क्रान्तिकारी बदलाव अनुभव कर रही हैं।

सन् 2017 में आई.आई.टी. मुम्बई के विद्यार्थियों ने सौर ऊर्जा से संचालित चूल्हे की खोज की। बैतूल के भारत भारती शिक्षा समिति नामक स्वयंसेवी संगठन के कार्यकर्त्ता मोहन नागर ने जब यह समाचार पढ़ा, तो उन्होंने आई.आई.टी. टीम मुंबई से सम्पर्क किया। उनकी मदद से उन्होंने बांचा गाँव, जो खाना पकाने के लिए अभी तक लकड़ी आदि के ईंधन पर निर्भर था, में इस विशेष सोलर चूल्हे को स्थापित करने की योजना बनायी। सितंबर 2017 में यह काम प्रारंभ हुआ, ग्रामीणों के लिए कई प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये गये और दिसंबर 2018 तक गाँव के सभी 74 घरों में सोलर पावर प्लेट और बैटरी आदि लगाकर सोलर चूल्हे स्थापित हो गए। यह मॉडल प्रतिदिन 3 युनिट ऊर्जा उत्पादित करता है, जो 5 सदस्यों के परिवार के लिये पर्याप्त है। इससे गाँव का पूरा कायाकल्प ही हो गया है।

बांचा गाँव के विकास की यह कहानी वैकल्पिक ऊर्जा की दिशा में एक नये परिवर्तन की सूचक है, जो अक्षय ऊर्जा की क्षमता को दशार्ती है। सौर ऊर्जा के माध्यम से इस तरह न केवल देश को आर्थिक रूप से मदद मिलेगी, बल्कि पूरे भारत में लागू होने पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा मेंअद्भुत काम हो सकता है।

यही है ऊर्जा का भावी स्रोत

पूज्य गुरुदेव ने भी लिखा है कि अगले दिनों सौर ऊर्जा ही ऊर्जा का प्रमुख स्रोत होगा। इससे वाहन चलेंगे, और रसोई के सम्पूर्ण कार्य भी संपन्न होंगे।

गद्गद हैं गाँववासी

गाँव के हरविंद व अन्यों का कहना है कि इसके चलते न केवल भोजन बनाने के लिए ही सुविधा हुई है, बल्कि इससे उनके घरों में बिजली भी आ गई है। जमुना बाई कहती हैं कि सौर चूल्हों ने पूरे गाँव के बच्चों और महिलाओं की जिंदगी ही बदल दी है। अब चूल्हे के धुएँ से भी परेशान नहीं होना पड़ता और हम घण्टे भर में ही भोजन बना लेते हैं। पहले हमारी आँखें खाना बनाते समय धुएं के कारण जलती थीं। हमारे बच्चों को पढ़ाई की जगह लकड़ी लेने जंगलों में भेजना पड़ता था, लेकिन अब स्थिति बदल गई है। अब हमारे बच्चे पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं।

ध्यान मात्र एकाग्रता नहीं है। वह तो इसकी पहली अवस्था है। जब व्यक्तित्व परमात्मा के दिव्य प्रकाश से पूर्ण प्रकाशित होने लगता है, तब ध्यान सम्पन्न हुआ माना जाता है।

समाज में नवचेतना जगाता गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान

गाँव के 56 घरों में एक साथ यज्ञ

लोगों ने बड़ी श्रद्धा से बुराईयाँ छोड़ीं और अच्छाईयाँ ग्रहण करने के संकल्प लिए

यज्ञ संचालन के लिए प्रस्थान करती युग पुरोहितों की टोली

देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ देवास के प्रयासों से देवास से लगभग 30 किलोमीटर दूर ग्राम पटाड़ी के 56 घरों में एक साथ, एक ही समय पर यज्ञ हुआ। लगभग 400 लोगों ने बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ' योजना का लाभ लिया। लोगों ने पूर्णाहुति के समय आत्मिक उत्थान के सूत्र हृदयंगम करते हुए देव-दक्षिणा स्वरूप बुराइयाँ छोड़ने तथा अच्छी आदतें अपनाने के संकल्प लिए।

इस यज्ञ अभियान को सम्पन्न कराने देवास से सरिता पाटीदार एवं नीति श्रीवास्तव के नेतृत्व में पुरोहित-परिव्राजकों की टोली पहुँची थी। श्री रमेश नागर एवं संतोष शर्मा ने यज्ञ से वायुमंडल की शुद्धि, स्वास्थ्य रक्षा और मानव में देवत्व के उदय जैसे लाभों की चर्चा की। कई यजमानों ने पुंसवन आदि संस्कार सम्पन्न कराए। महेश आचार्य एवं प्रमोद निहाले ने शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष में गायत्री यज्ञ योजना एवं उसके लाभों को नए-नए परिजनों तक पहुँचाने का आह्वान किया।

ग्राम पटाड़ी में सम्पन्न हुए घर-घर गायत्री यज्ञ अभियान में इंदौर, देवास सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से भी आए परिजनों की भागीदारी रही। यज्ञ समिति के मुख्य कार्यकर्त्ता महेश पटेल एवं कमल वर्मा ने आयोजन को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी परिजनों का आभार व्यक्त किया।

ग्राम वासियों में शानदार उत्साह, यज्ञ का व्यावहारिक स्वरूप समझाया

सुरोठ, करौली। राजस्थान

तहसील हिंडोन के कैलादेवी नवयुवक मण्डल, सुरोठ अपने कस्बे और आसपास के गाँवों में युवाओं में नवजागृति लाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। इसी क्रम में मण्डल द्वारा दिनांक 24 फरवरी 2022 को अग्रसेन वाटिका सुरोठ में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। श्री श्यामसुन्दर शर्मा एवं श्री बहादुर सिंह की टोली ने इसका संचालन करते हुए यज्ञ के व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक स्वरूप का बड़ा सुन्दर चित्रण किया।

यज्ञाचार्यों ने ग्रामवासियों को बड़ों का सम्मान करने, छोटों को प्यार देने, जीवन को सद्गुण एवं संस्कारों से सुशोभित करने, परस्पर जाति-पाँति जैसे भेदभावों को मिटाकर सबके उत्थान के प्रयत्नशील रहने के लिए प्रेरित किया।

24 कुण्डीय यज्ञ में 101 जोड़ों के साथ सैकड़ों अन्य गाँववासियों ने सामाजिक सद्भाव, शान्ति एवं सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ आहुतियाँ समर्पित कीं। आरम्भ में 101 बहिनों द्वारा मस्तक पर कलश धारण कर आकर्षक कलश यात्रा निकाली गई। व्यासपीठ से कुंवर सिंह डागुर, भगवान सिंह, प्रकाश चंद गुप्ता, देवेंद्र, मानसिंह, राजबहादुर, सीताराम सहित कैलादेवी नवयुवक मण्डल की कार्यकारिणी के सदस्यों का नेक कार्य करने के लिए सम्मान किया गया।

श्री श्यामसुन्दर शर्मा ने यज्ञ के तीन अंग देवपूजन, दान और संगतिकरण की व्याख्या की। उपस्थित सैकड़ों युवाओं और ग्रामवासियों को उन्होंने संदेश दिया कि श्रेष्ठता का सम्मान ही सच्चा **'देवपूजन'** है। समाज में व्याप्त अज्ञान, अभाव, अशक्ति को दूर करने का प्रयास **'दान'** है। परस्पर प्यार, सहकार का भाव **'संगतिकरण'** है। जिस समाज में इन तीनों का समावेश है वह कभी दुःखी या अभावग्रस्त नहीं रह सकता।

सुरौठ में निकली कलश यात्रा और यज्ञ के समय बुजुर्गों का सम्मान

रायगढ़। छत्तीसगढ़

ग्राम धूमाबहाल में दिनांक 13 से 15 फरवरी की तिथियों में तीन दिवसीय शक्ति संवर्धन गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समीपस्थ ग्राम अड़बहाल, झारमुड़ा, देवबहाल, बंगुरसिया, चुनचुना के निवासी भी सम्मिलित हुए। मंगल कलश यात्रा, पाँच कुंडीय यज्ञ, पावन प्रज्ञापुराण के प्रवचन एवं दीपयज्ञ में सैकड़ों ग्रामवासियों की भागीदारी रही। अंतिम दिवस यज्ञ की पूणार्हुति एवं संस्कार हुए। इस अवसर पर अनेक ग्रामीणों ने गुरुदीक्षा ली एवं देवदक्षिणा स्वरूप अपनी-अपनी बुराइयाँ छोड़ने के संकल्प लिए।

यज्ञ का संचालन ग्राम चपले के प्रज्ञापुत्र श्री बृजमोहन डनसेना एवं श्री गौरी ने किया।

ग्राम धूमाबहाल में यज्ञ करते ग्रामवासी

श्री बी.एल. डनसेना के मार्गदर्शन में संस्कार हुए। श्रद्धालुओं में निःशुल्क साहित्य वितरित किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री जगदुराम यादव, करमसिंह राठिया, सादराम भुईया, सुंदरलाल राठिया, संतोषी राठिया, बुधीन बाई, पुनीराम चौहान, अगनू भुईया, बिहारी राठिया, नरेश राठिया, कनहाई राठिया, सूर्यनारायण आदि की मुख्य सक्रियता थी।

विचार क्रान्ति के लिए समर्पित है गायत्री ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज

शिवरात्रि पर 5000 लोगों में निःशुल्क साहित्य वितरण

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश

पावन शिवरात्रि पर्व पर जब करोड़ों शिवभक्त भगवान शिव की आराधना-अभिषेक करने में व्यस्त थे, तब गायत्री ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज के कर्मठ कार्यकर्त्ता निकल पड़े थे जनभावनाओं में शिवत्व का संचार करने। महाकाल स्वरूप युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के प्रति समर्पित युग सृजेताओं की टोली संगम के निकट स्थित मनकामेश्वर मंदिर में पहुँची। उन्होंने प्रातः 6 बजे से 10 बजे तक लगभग 5000 लोगों को निःशुल्क पुस्तकें और पत्रिकाएँ 'ज्ञान प्रसाद' के रूप में प्रदान कीं। श्री देबब्रत साहा राय के नेतृत्व में निकली टोली ने अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान पत्रिकाएँ एवं पॉकेट बुक्स देते हुए श्रद्धालुओं से मन एवं भावनाओं में शिवत्व का संचार करने तथा नशे जैसी बुराइयों से दूर रहने का आह्वान किया। सर्वश्री जगदीश चन्द्र जोशी, आर.के. सिंह, शेषनाथ श्रीवास्तव, दिनेश यादव, सरयू प्रसाद विश्वकर्मा, जगत पाल गुप्ता, सुशील कुमार श्रीवास्वव, प्रेम चंद्र सिंह, रामदेव यादव, अवधेश सिंह, गुरुप्रसाद प्रजापति एवं पूर्णिमा गुप्ता ने इस अभियान के लिए अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

बाँये बनारस में और दायें चित्रकूट के घाट पर साहित्य वितरण

अयोध्या, चित्रकूट एवं बनारस में ज्ञानयज्ञ

ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित प्रयागराज शाखा ने बसंत पंचमी के बाद से ही निःशुल्क साहित्य वितरण का अभियान चला रखा है। इस क्रम में उन्होंने अयोध्या, चित्रकूट एवं बनारस जाकर वहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को युगऋषि की विचार संजीवनी प्रदान की।

7 फरवरी को सर्वश्री शेषनाथ श्रीवास्तव, दिनेश यादव, स्वस्तिक श्रीवास्तव, अंकित यादव एवं देबब्रत साहा राय अयोध्या पहुँचे। पहले वहाँ दिनभर विविध घाटों पर श्रद्धालुओं से सम्पर्क कर उन्हें साहित्य दिया। फिर हनुमानगढ़ी जाकर 3000 लोगों को निःशुल्क साहित्य प्रदान किया।

12 फरवरी को चित्रकूट धाम पहुँचकर लगभग 2000 श्रद्धालुओं में साहित्य वितरित किया। 20 फरवरी को बनारस पहुँचे और बाबा विश्वनाथ के लगभग 3000 भक्तों को साहित्य प्रदान करते हुए नवयुग की संरचना में भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

देव संस्कृति विद्यालय नेगूरडीह द्वारा ज्ञानयज्ञ

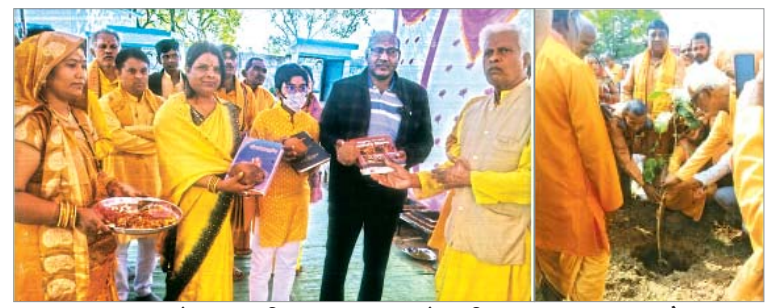

जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, नवागढ़ में साहित्य स्थापना एवं वृक्षारोपण

नेगूरडीह, जाँजगीर चाँपा। छत्तीसगढ़

नवागढ़ विकासखण्ड स्थित देव संस्कृति विद्यालय, नेगूरडीह ने शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में विचार क्रांति के लिए विशेष प्रयास करते हुए शानदार सफलता प्राप्त की। उनके द्वारा पं. जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, नवागढ़ में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के समग्र वाङ्मय साहित्य (70 खण्ड) की स्थापना अत्यंत भावपूर्ण एवं प्रेरणाप्रद समारोह के साथ की गई। इसके अलावा मिशन का ₹21000/- का अन्य साहित्य-वेद, पुराण, गायत्री महाविज्ञान, मीमांसा, दर्शन आदि भी स्थापित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित महाविद्यालय के व्यवस्थापक श्री विनोद कुमार बंसल युग साहित्य से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने गायत्री परिवार के प्रतिनिधियों से परम पूज्य गुरुदेव का समस्त साहित्य उनके महाविद्यालय में स्थापित करने का आग्रह किया। साहित्य स्थापना कार्यक्रम में श्री ललित प्रकाश पटैरिया, कुलपति नंदकिशोर पटेल विश्वविद्यालय रायगढ़, श्री नारायण प्रसाद कश्यप, पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

- इसी प्रकार संजीवनी महाविद्यालय रहौद में भी युगऋषि के वाङ्मय के समग्र खण्ड और ₹11000/- का अतिरिक्त साहित्य की स्थापना की गई।
- 21 स्थानों पर साहित्य विस्तार दीपयज्ञ तथा तीन स्थानों पर पंच कुण्डीय यज्ञ के साथ कुल ₹53000/- का साहित्य घर-घर तक पहुँचाया जा सका।
- देव संस्कृति विद्यालय के व्यवस्थापक श्री बालकराम रत्नमूल बताते हैं कि उनके द्वारा 500 प्रज्ञा अभियान पाक्षिक तथा 100 अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ भी निःशुल्क बाँटी जाती हैं।
- नेगूरडीह शाखा ने गतवर्ष 3 एकड़ भूमि में 251 पौधे भी रोपे थे।

कहा कि विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अपने स्वर्णिम अतीत तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की गाथाएँ पढ़ने का अवसर भी मिलना चाहिए। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार राज खन्ना की पुस्तक 'आजादी के पहले-आजादी के बाद' भी पुस्तकालय में स्थापित की गई। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधक उर्मिला सिंह, प्रधानाचार्य डॉ. गुलाब सहित समस्त आचार्य एवं गणमान्य उपस्थित थे।

सर्वोदय इंटर कॉलेज, लंभुआ में वेद स्थापना

सत्साहित्य स्थापना से पूर्व साहित्य फेरी

सुल्तानपुर। उत्तर प्रदेश : गायत्री परिवार सुल्तानपुर ने अपने जिले के 24 विद्यालयों में वेद एवं इतिहास के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की स्थापना का अभियान आरम्भ किया है। इसका शुभारंभ लंभुआ स्थित सर्वोदय इंटर कॉलेज से अत्यंत आकर्षण एवं प्रेरणाप्रद ढंग से हुआ। स्थापना से पूर्व छात्र-छात्राओं ने वेदों को मस्तक पर रखकर प्रभात फेरी निकाली, बाजार का भ्रमण किया। उसके बाद पूजन-अर्चन करके वेदों की विद्यालय में स्थापना की गई। डॉ. सुधाकर सिंह ने

सुख मृगतृष्णा की तरह है, उसके पीछे मत पड़ो। केवल कर्त्तव्य को पकड़ो, सच्चा सुख अनायास ही मिल जाएगा।

किसानों के लिए कृषिभूमि में सुरक्षित सिंचाई हेतु खेत तालाब ही हैं सर्वश्रेष्ठ विकल्प

भारत में निरन्तर कम होती हरियाली, बढ़ते प्रदूषण और पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से वर्षा की अनियमितता बढ़ती ही जा रही है। परिणाम स्वरूप देश का हर क्षेत्र प्रभावित हो रहा है। कहीं बाढ़ तो कहीं सूखे का सामना करना पड़ रहा है। इससे भी बड़ी समस्या है वर्षाजल का सही-सही प्रबन्धन न होना। जो जल बरसता है वह नदी-नालों से होकर समुद्र तक पहुँच जाता है। वह धरती में समा ही नहीं पाता।

परिणाम स्पष्ट है। किसान नलकूपों पर आश्रित हैं। अत्यधिक जल के दोहन से जल स्तर दिन-प्रतिदिन नीचे गिरता जा रहा है। नलकूप स्थापन पर अत्यधिक राशि व्यय करने के उपरांत भी यह निश्चित नहीं है कि समय पर आवश्यकतानुसार पर्याप्त पानी मिलेगा या नहीं। संशय की स्थिति में किसान के पास एक मात्र विकल्प है कि खेत तालाब का निर्माण करें। खेत-तालाब का निर्माण कृषकों की भूमि पर सुरक्षात्मक सिंचाई के प्रबंधन एवं भूजल संवर्धन हेतु जल-संग्रहण संरचना के निर्माण के उद्देश्य से किया जाता है। जिससे कम बारिश में भी उनकी फसल का बचाव सुनिश्चित किया जा सके।

खेत तालाब : कम लागत, अधिक लाभ

1 हेक्टेयर खेत के 5 प्रतिशत हिस्से (500 वर्गमीटर) में 3 मीटर की गहराई का खेत-तालाब बनाते हैं तो मौटे तौर पर हमारे पास 1500 घनमीटर पानी उपलब्ध रहता है। यदि खेत में किसी फसल को एक बार में 5 से.मी. पानी देने की आवश्यकता है, तो उस फसल को हम लगभग 3 बार पानी दे सकते हैं। यदि तालाब दो गुने अर्थात् 10 प्रतिशत हिस्से में हो तो उससे छः बार सिंचाई की जा सकती है।

खेत के 5% भाग पर बने तालाब से लगभग तीन बार और 10% भाग पर बने तालाब से लगभग छः बार सिंचाई की जा सकती है।

वर्षा का पानी जहाँ गिरे, उसे वहीं रोकें

आलेख : श्री योगेन्द्र गिरि, जल संरक्षण विशेषज्ञ ग्राम प्रबन्धन संकाय सदस्य, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्तमान युग में जल संकट विकराल रूप लेता जा रहा है। आज भी जल की कमी नहीं है, आवश्यकता है जल संरक्षण और उसके प्रबंधन की। इस संदर्भ में पाठकों के अनुरोध पर सतही जल संरक्षण विधियाँ पुनः प्रकाशित की जा रही हैं।

खेत तालाब का प्रारूप

खेत तालाब निर्माण की तकनीकी जानकारी

- क्षेत्रीय भौगोलिक परिस्थियों को ध्यान में रखते हुए आवश्यक तकनीकी मापदण्डों के आधार पर खेत तालाब का निर्माण किया जाना चाहिए।
- तालाब निर्माण के लिए सर्वप्रथम उपयुक्त स्थान का चयन किया जाना आवश्यक है। सिंचाई के लिए कितनी मात्रा में पानी की आवश्यकता होगी, इसकी गणना करने के उपरांत तालाब के आकार-प्रकार का निर्धारण किया जाना चाहिए।
- तालाब निर्माण स्थल की सफाई अवश्य करवाएँ। स्थल पर लगी घास व झाडियाँ जड़ सहित निकालकर अच्छी तरह से सफाई करा ली जानी चाहिए।
- तालाब की पाल (बाँध, मेंड़) के आधार में जगह-जगह छोटे-छोटे गड्ढे बना दिए जाने चाहिए, जिससे पाल निर्माण हेतु डाली जाने वाली मिट्टी की जमीन से अच्छी तरह पकड़ हो सके।
- मुरम वाले क्षेत्रों में जल रिसाव रोकने के लिए नींव/पड़ल भरी जाना नितांत आवश्यक है अन्यथा पानी नीचे से निकल जाएगा। यदि ट्रैक्टर से दबाई की जाती है तो 3 से 4 इंच मोटाई की परत में मिट्टी पाल पर परत दर परत डालकर बिछाई जाए।
- निर्माण में खुदाई से प्राप्त मिट्टी सीधे ही पाल पर नहीं डाली जाय, अपितु खुदाई में प्राप्त मिट्टी के ढेलों को अच्छी तरह तोड़कर बारीक कर ली जाय।
- तालाब की पाल की ऊपरी चौड़ाई कम से कम 2 मीटर रखी जाय तथा मिट्टी की ढलान 2: 1 रखा जाए।
- तालाब निर्माण में पाल की भीतर की ओर अच्छी मिट्टी (ऐसी मिट्टी जिससे पानी कम से कम रिसे) तथा बाहरी परत (लगभग 30 से 60 से.मी. मोटाई की) मुरम अथवा कंकरीली मिट्टी द्वारा बनाई जाना आवश्यक है।
- तालाब के जलभराव वाले हिस्से में पाल के एकदम नजदीक से मिट्टी नहीं खोदी जानी चाहिए।
- तालाब में जिस ओर पानी भरेगा उस ओर की पाल के ढलान पर पिंचिंग (पत्थर जमाव) कराई जानी आवश्यक है।
- तालाब में अतिरिक्त पानी के निकास की पर्याप्त व्यवस्था रखी जाय। स्थानीय इंजीनियर से संपर्क कर निकास द्वार की चैड़ाई की गणना करा ली जाय।
- तालाब में पूरी क्षमता से भरा हुआ पानी पाल से कम से कम 3 फीट नीचे ही होना चाहिए।
- तालाब के नीचे की ओर पाल के किनारे घास, रतनजोत के पौधे का रोपण या उद्यानिकी स्थापना की जा सकती है, जिससे पाल की मिट्टी को मजबूती प्राप्त होती है एवं पौधों की जड़ें काफी छोटी होने के कारण पाल को कोई खतरा भी नहीं होगा बल्कि किसान को आने वाले समय में इससे अतिरिक्त आमदनी ही होगी।
- पाल हेतु डाली गई मिट्टी की दबाई नहीं की जाने की स्थिति में पाल की ऊँचाई सामान्य से अधिक (25 प्रतिशत अधिक) रखी जाय। एक या दो वर्षा के पश्चात् मिट्टी अपने आप दबकर कम हो जाएगी एवं पाल की निर्धारित ऊँचाई रह जाएगी।
- उपरोक्त सावधानियाँ एवं सुझावों का पालन करने से कृषक द्वारा निर्मित किए गए तालाब सुरक्षित रहेंगे। साथ ही लंबे समय तक उनसे लाभ प्राप्त होता रहेगा। इससे जल का संरक्षण होगा तथा तालाब के नीचे की ओर भूमिगत कुएँ व नलकूपों के जलस्तर में वृद्धि होगी।

आज की समझदारी से थम जायेगा पहाड़ी, नदी, नालों में बहता जल, तो सुखद और सुनहरा होगा कल

जनमत तैयार कर सामूहिक प्रयासों से जलसंचय के लिए कई प्रकार की संरचनाओं का निर्माण किया जा सकता है

पठारी खाइयोंमें बनीं गली प्लग संरचनाएँ

परकोलेशन टेंक

वानस्पतिक अवरोध/बुश वुड चेकडेम

बोरी बंधान

गली प्लग

जिन पहाड़ियों पर ढलान ज्यादा होती है वहाँ वर्षाजल के बहाव से गलियाँ (नालियाँ) निर्मित हो जाती हैं। इन्हें गली की गहराई एवं चैड़ाई के अनुसार स्थानीय पत्थरों के द्वारा स्थान-स्थान पर शृंखलाबद्ध बाँधा जाता है। इससे वर्षा जल के बहाव की गति कम होती हैं एवं मिट्टी, जल तथा नमी का संरक्षण होता है।

परकोलेशन टैंक

परकोलेशन टैंक वास्तव में तालाबों का ही एक विशेष प्रकार है, जिसमें बरसात के बहते पानी को इकट्ठा किया जाता है। इन तालाबों में इकट्ठा हुआ पानी उनकी तली से धीरे-धीरे रिसकर जमीन के नीचे की परतों में भरता है। जमीन के नीचे की परतों में भरता हुआ पानी भूजल के स्तर को उपर उठाता है और भूजल भंडारों को और अधिक समृद्ध कर ज्यादा उपयोगी बनाता है।

वानस्पतिक अवरोध/ बुश वुड चेकडेम

भू-क्षरण रोकने का एक अन्य उपाय वानस्पतिक अवरोध बनाना है। इसके अन्तर्गत घास, फलदार एवं झाड़ीदार पौधों को इस प्रकार एक-दूसरे के पास रोपा जाता है, जिससे वे पानी के बहाव की गति को कम करते हुए मृदा को जमने हेतु रोक सकें।

बुश वुड चेकडेम का निर्माण दो लूज़ बोल्डर स्ट्रक्चर के मध्य बाँस-बल्लियों की संरचना से अवरोध तैयार किया जाता है।

बोरी बंधान

यूरिया/खाद अथवा सीमेण्ट की जूट/प्लास्टिक आदि की खाली बोरियों में मिट्टी अथवा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री को भर कर उनसे यह बोरी बंधान बनाया जाता है। उन्हें नदी-नालों में प्रवाह को काटते हुए बहुत ही व्यवस्थित ढंग से ईंट की जुड़ाई की तरह रखा जाता है। पानी रोकने की यह संरचनाएँ बहुत ही कम लागत में बनाई जा सकती हैं। गाँव में बहने वाले छोटे-छोटे नालों के लिए, जिनका क्षेत्र 0.1 वर्ग मील से लेकर 4 या 5 वर्ग मील तक हो सकता है, वहाँ के लिए बोरी बंधान बहुत उपयुक्त हैं।

गेबियन संरचना

लूज बोल्डर चेक की तरह यह भी एकत्रित किये गये बोल्डर द्वारा बनाया जाता है। इस संरचना में पत्थरों को तार की जाली में बांध कर रखते हैं, जिससे पत्थरों के पानी के साथ बहने की संभावना समाप्त हो जाती है। यह आकार में **लूज बोल्डर से** बड़े होते हैं, तथा इसके ऊपरी हिस्से में पानी का संग्रह अधिक होता है।

खेत के चारों ओर नाली द्वारा भू-जल संवर्धन

खेत की मेंढ़ के चारों ओर गहरी नाली अथवा खाई बनाकर भी खेतों में भूजल संवर्धन किया जा सकता है। स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति के अनुरूप इस नाली को ढाल के अनुसार बनाई जाये, जिससे पानी इस खाई में ही भरा रहे और जमीन में धीरे-धीरे रिसता रहे। उसका उपयोग आने-जाने के लिये पुलिया के रूप भी किया जा सकता है।

तालाब निर्माण

जल संग्रहण के भण्डारण के लिए तालाब का निर्माण अति आवश्यक है, जिससे कि क्षेत्र की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा भूमिगत जल रिसाव बढ़े एवं जल का समुचित भण्डारण हो। जमीन की उपलब्धता के अनुसार छोटे से लेकर बड़े-बड़े आकार के तालाब बनाए जा सकते हैं।

सोक पिट

यह संरचना घरों के आसपास या खुली जगह पर पानी रोकने हेतु बनाई जा सकती हैं। इस संरचना को परकोलेशन पिट अथवा सोखता गड्ढा भी कहते हैं। इस गढ्ढे के आकार-प्रकार का निर्धारण स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार (गोल, चौकोर अथवा किसी अन्य आकार) कर सकते हैं। सामान्यतः इन सोक पिटों की लम्बाई, चैड़ाई और गहराई लगभग तीन-तीन मीटर रखी जा सकती है। जलप्रवाह की दिशा में खेत के निचले क्षेत्र से ऊपरी क्षेत्र तक भी कई पिट बनाए जा सकते हैं।

गेबियन संरचना

खेत के चारों ओर बनीं गहरी नालियाँ

गाँवों की खाली जमीन पर तालाब निर्माण

सोक पिट(सोखता गड्ढे)

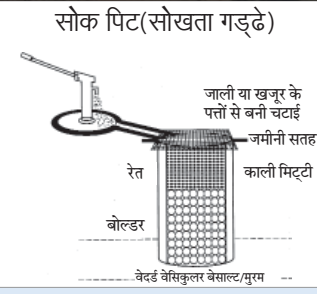

दूसरों से अपनी तुलना कर निराश मत हो जाओ। हर व्यक्ति की अपनी मौलिक विशेषताएँ होती हैं। अपनी विशेषताओं को पहचानो और विकसित करते रहो।

छत्तीसगढ़ की नारी सशक्तीकरण एवं बाल निर्माण हेतु संगठित सशक्त योजनाएँ

जन्मशताब्दी वर्ष सन् 2026 प्रदेश के हर गाँव के मंथन का लक्ष्य

78 टोलियों के माध्यम से 170 ब्लॉक में हो रही हैं नारी सशक्तीकरण कार्यशालाएँ

बिलासपुर। छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ की नारी शक्ति ने परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष को ध्यान में रखते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दीनया माताजी के 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' के उद्घोष को साकार करने के लिए क्रान्ति का शंखनाद किया है। इस वर्ष कुल 78 टोलियों के माध्यम से पूरे प्रदेश के 170 ब्लॉक में नारी जागरण कार्यशालाएँ आयोजित हो रही हैं।

पूरे प्रदेश के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर उनके संचालन के लिए टोलियों को ऑनलाइन बिदाई दी गई। छत्तीसगढ़ जोन प्रभारी श्री शुकदेव निर्मलकर ने इसे सम्बोधित करते हुए प्रांतीय नारी संगठन के प्रयासों का अभिनन्दन किया और इसे अनुकरणीय कार्य बताया। उन्होंने सन् 2026 तक नारी जागरण अभियान को गाँव-गाँव तक पहुँचाने का आह्वान किया।

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौर ने बहिनों की सक्रियता, संकल्प और आत्मविश्वास की सराहना की। उन्होंने कहा कि जो बहिनें कभी घर से बाहर न निकली हों, कभी मंच में न चढ़ी हों, ऐसी बहिनों ने भी स्वयं को एक प्रशिक्षक के रूप में टोली में जाने हेतु तैयार कर लिया है, यह नारी जागरण अभियान की सफलता का शुभ संकेत है। यह आत्मविश्वास ही नारी जागरण का परिचायक है।

छत्तीसगढ़ में प्रादेशिक स्तर पर नारीजागरण का शंखनाद नवम्बर 2021 में ही हो गया था। पहले जिला स्तरीय कार्यशालाओं के लिए 23 टोलियाँ तैयार की गईं और फिर इन कार्यशालाओं से ब्लॉक स्तरीय कार्यशालाओं के लिए 78 टोलियों का गठन किया गया है।

छत्तीसगढ़ नारी जागरण अभियान की प्रमुख डॉ.श्रीमती कुन्ती साहू दीदी ने जन्मशताब्दी वर्ष 2026 तक के समय को बहिनों के लिए सक्रियता का सुनहरा अवसर बताया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले 4-5 वर्षों में हम चैन से नहीं बैठेंगे और पूरे प्रदेश में क्रान्तिकारी परिवर्तन ले आएँगे।

इस विदाई समारोह में सभी टोलियों को कार्यशाला में संपादित होने वाले विषयों के प्रस्तुतीकरण के संदर्भ में विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला का संचालन एवं व्यवस्था पर विस्तृत मार्गदर्शन डॉ.कुन्ती साहू एवं सहयोगी बहिनों द्वारा किया गया।

उत्कृष्ट जीवन की प्रेरणाएँ और व्यावहारिक समस्याओं के समाधान

बरमकेला, रायगढ़। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ बरमकेला में दिनांक 20 फरवरी 2022 रविवार को नारी जागरण कार्यशाला का कार्यक्रम संपन्न हुआ। रायगढ़ से आई श्रीमती चमन गौतम जी, श्रीमती विनीता सिंह, इंदु कुम्भकार एवं जंबूवती जायसवाल की टोली ने कार्यशाला का संचालन करते हुए नारी उत्थान के सम्बन्ध में युगऋषि का संदेश दिया तथा वर्तमान जीवन की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान भी सुझाया।

श्रीमती चमन गौतम ने अपने उद्बोधन में सनातन काल में नारी की गरिमा का चित्रण करते हुए समाज निर्माण में संस्कारों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सद्गुण और संस्कारों के प्रति सजग माता की कोख से ध्रुव, प्रहलाद, अभिमन्यु जैसे महामानव जन्म लेते हैं। श्रीमती

कार्यशाला का संचालन करती बहिनों की टोली

विनीता सिंह ने नारी समस्या एवं उनके समाधान पर विस्तृत चर्चा की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन, अतिथि सत्कार आदि की औपचारिकताओं के साथ हुआ। लगभग 50 माताओं, बहनों ने इसका लाभ लिया। कुछ कार्यकर्त्ता भाई भी लाभान्वित हुए। सरिया क्षेत्र की श्रीमती शव्या प्रधान ने कार्यक्रम का संचालन किया, श्रीमती समता यादव ने नारी जागरण गीत प्रस्तुत किए। श्री अरुण कुमार आर्य जी और श्री यशवंत सिंह ने व्यवस्थाओं में विशेष योगदान दिया।

दिवंगत हुई देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री हरिशंकर चन्द्रा,
सक्ती। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ सक्ती के परिव्राजक ग्राम जेठा निवासी श्री हरिशंकर चन्द्रा 15 जनवरी 2022 को 70 वर्ष की आयु में परमात्म चेतना में विलीन हो गए। अपने क्षेत्र में उन्होंने मिशन का भरपूर काम किया। उनकी दोनों पुत्रियों प्रज्ञा एवं सविता ने अर्थी को कंधा देकर एवं चिता को मुखाग्नि देकर प्रगतिशील विचारधारा को प्रोत्साहित किया।

श्रीमती पुष्पा राजपूत
खड़कौद, बुरहानपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट खड़कौद से जुड़ी श्रीमती पुष्पा राजपूत, पत्नी श्री रमेश सिंह राजपूत का दिनांक 26 जनवरी 2022 को देहावसान हो गया। वे 64 वर्ष की थीं।

फार्म-4

प्रकाशन का स्थान :	हरिद्वार
प्रकाशन की अवधि :	पाक्षिक
प्रकाशक का नाम :	श्रीमती शैलबाला पण्ड्या
प्रकाशक का पता :	श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
क्या भारत का नागरिक है? :	हाँ, भारतीय
मुद्रक का नाम :	उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखण्ड)
सम्पादक का नाम :	प्रमोद शर्मा
सम्पादक का पता :	शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
क्या भारत का नागरिक है? :	हाँ, भारतीय
उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों।	श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टी.एम.डी.), शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

मैं श्रीमती शैलबाला पण्ड्या एतद्द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के आधार पर उपरोक्त विवरण सत्य है।

दिनांक-16.3.2022 प्रकाशक का हस्ताक्षर
श्रीमती शैलबाला पण्ड्या

युवा युगसृजेता श्रावस्ती

मंत्रलेखन साधना अभियान

बहराइच। उत्तर प्रदेश

श्रावस्ती में आगामी 20 नवम्बर को होने वाले 'युग सृजेता समारोह-उत्तर प्रदेश' के संदर्भ में 20 मार्च को बहराइच उपजोन की कार्यकर्त्ता गोष्ठी संपन्न हुई। इस अवसर पर युवा साधना अभियान के लिए गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाओं का लोकार्पण किया गया। ये पुस्तिकाएँ प्रदेश के सभी जनपदों में भेजी जा रही हैं, जहाँ गायत्री परिजन नए युवाओं को गायत्री मंत्र लेखन के माध्यम से साधना अभियान से जोड़ेंगे।

गोष्ठी में उपजोन के लखीमपुर खीरी, श्रावस्ती, बलरामपुर, बहराइच सहित गोंडा व सीतापुर के गायत्री परिजनों ने भी प्रतिभाग किया। इसे प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री जयप्रकाश वर्मा व बहराइच उपजोन समन्वयक श्री राम सजीवन पाल ने संबोधित किया।

बाल संस्कारशाला : बच्चों के पालकों का सम्मेलन

बच्चों के संस्कार और विचारों में हुए परिवर्तन से अभिभावक भी गद्गद हैं

छत्तीसगढ़ में चलने वाली बाल संस्कार शालाओं में पढ़ने वाले अनेक बच्चे आज शिक्षक की भूमिका भी निभा रहे हैं और बहुत ही कुशलतापूर्वक अपनी प्रतिभा का नियोजन भी कर रहे हैं।

6 फरवरी को छत्तीसगढ़ में चल रही बाल संस्कार शालाओं के अभिभावकों का ऑनलाइन सम्मेलन आयोजित किया गया था। इसमें विभिन्न जिलों में चल रही ऑनलाइन एवं ऑफलाइन बाल संस्कार शालाओं में शामिल बच्चों के लगभग 140 पालक शामिल हुए। उन्होंने अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक बाल संस्कार शालाओं से बच्चों को मिलने वाली शिक्षा पर बड़े सकारात्मक एवं उत्साहवर्धक विचार व्यक्त किए। उन्होंने बच्चों में हुए परिवर्तन, उनकी आदतों एवं स्वभाव में आए सुधार, घर में बढ़ते सहयोग तथा बच्चों के बदलते विचारों की चर्चा की, जिन्हें सुनकर सभी श्रोता एवं शाला संचालक आचार्य गद्गद थे।

यह सम्मेलन आचार्यों को आत्मगौरव की अनुभूति कराने वाला था। परिजनों को महसूस हुआ कि परम पूज्य गुरुदेव ने बाल संस्कार शाला को इतना महत्वपूर्ण क्यों माना है? छत्तीसगढ़ की वरिष्ठ प्रशिक्षिका डॉ. कुंती साहू ने बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में पालकों व परिवार की भूमिका पर महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

"पालकों ने कहा :-

हम बच्चों की शिक्षा में बहुत खर्च करते हैं पर अच्छे संस्कार बिना सब बेकार हो जाता है। बाल संस्कार शाला इस कमी की पूर्ति कर रही है। मैं स्वयं बच्चों के साथ बाल संस्कार शाला की कक्षा में बैठती हूँ एवं अपने विद्यालय के बच्चों को भी जोड़ती हूँ। - **श्रीमती दुर्गेश नंदिनी यादव, सूरजपुर**

स्वयं मुझ में अनेक बुराईयाँ थीं, लेकिन बाल संस्कार शाला का लाभ ले रही मेरी पुत्री में आए परिवर्तन के कारण स्वयं मेरी भी बुरी आदतें दूर हो रही हैं।
- **कु. खुशी सिंह के पिता श्री अरुण कुमार सिंह, रायगढ़**

हम तो बच्चों को समय नहीं दे पाते, लेकिन बाल संस्कार शाला के आचार्यों की निःस्वार्थ सेवाओं के कारण बच्चों को अच्छी विद्या व अच्छे संस्कार मिल रहे हैं। - **श्रीमती विमला चंद्रा, जांजगीर**

मेरी बेटी अंकिता बाल संस्कार शाला में जो गतिविधियाँ और कहानियाँ सीखती है उसे घर में हम लोंगों को एवं अपने नाना-नानी को सीखाती है। उसमें अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास हुआ है। - **श्रीमती कमलेश यादव, सरगुजा**

मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया

अत्यंत भावविभोर हो गए अभिभावक

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ द्वारा दिनांक-13 फरवरी को ' मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया। इसमें प्रदेश में ऑनलाइन तथा ऑफलाइन चलने वाली बाल संस्कारशालाओं के 150 बच्चे और उनके माता-पिता जुड़े।

प्रारंभ में बाल आचार्य कु. प्रेरणा ने वंदना प्रस्तुत की। आचार्य श्रीमती सुलभा जायसवाल ने माता-पिता का महत्व समझाया। आचार्य कु. खुशी सिंह ने अत्यंत भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के श्री सुरेन्द्र गुप्ता ने माता-पिता की गौरव-गरिमा गाई।

मातृ-पितृ पूजन के क्रम में सर्वप्रथम आध्यात्मिक माता-पिता परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दीनीया माता जी का पूजन किया गया। फिर बच्चों द्वारा अत्यंत भावविभोर कर देने वाला मातृ-पितृ पूजन का क्रम आरंभ हुआ। बच्चों ने अपने माता-पिता के चरण पखारे, तिलक वंदनकर, कलावा बाँधकर आरती उतारी, उनका चरण वंदन किया और माता-पिता ने अपने बच्चों को आशीर्वाद दिया। बालक हर्षित कुमार ने छत्तीसगढ़ी में माता-पिता पर बहुत ही सुन्दर भावपूर्ण गीत गाया। बच्चों के इन संस्कारों ने अभिभावकों को अभिभूत कर दिया।

डॉ. अरविन्द कुमार ने अभिभावों का प्रतिनिधित्व करते हुए विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि बाल संस्कार शाला से प्रेरित होकर बच्चे अपनी संस्कृति सीख रहे हैं। यह संस्कार शाला बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ के प्रशिक्षक श्री चंपेश्वर साहू ने भी आशीर्वचन दिए।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशिष्ट सेवाओं का लाभ लीजिए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के विभिन्न विभागों द्वारा ऑनलाइन अल्प अवधि मॉड्युलर कोर्स चलाए जा रहे हैं। विस्तृत जानकारी के लिए- लॉगऑन कीजिए-
http//www.dsvv.ac.in/stmc/
सम्पर्क सूत्र -info.stmc@ dsvv.ac.in

देशव्यापी देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ शृंखला के लिए टोलियों की विदाई

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने कहा

सामाजिक एकता, संस्कार, सद्भाव हमारा लक्ष्य है।

कोरोना संक्रमण पर नियंत्रण स्थापित होने के बाद पुनः प्रारम्भ हो रही 'देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ' शृंखला वस्तुतः ऋषि संस्कृति के विश्वव्यापी विस्तार का ही एक चरण है। मानवीय वृत्तियों में सुधार-परिष्कार से ही सारी दुनिया में तनाव घटेगा और सुख-शान्ति का वातावरण बनेगा। इसके लिए परस्पर सामंजस्य-सद्भाव बढ़ाने की आवश्यकता है। हमारी सनातन संस्कृति विश्व मानवता को शान्ति-सद्भाव का पाठ पढ़ाती है। हमारा लक्ष्य सामाजिक एकता, संस्कार और सद्भाव स्थापित करना है।

दिनांक 25 फरवरी को देशव्यापी कार्यक्रमों के संचालन के लिए टोलियों को विदाई देते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने यह संदेश दिया। उन्होंने इस अभियान को कारोना संक्रमण काल के बाद पीड़ित परिवारों में श्रद्धा, विश्वास और स्नेह, सामंजस्य और मनोबल बढ़ाने का अभियान भी बताया।

शान्तिकुञ्ज से रवाना हो रही टोलियाँ श्रद्धेय द्वय से विदाई लेते हुए

इस अवसर पर श्रद्धेय डॉ. साहब एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने विदाई ले रही टोलियों के सदस्यों को संबोधित करते हुए टोली के सदस्यों को उनके महान दायित्वों एवं आचरण एवं व्यवहार की मर्यादाओं का स्मरण कराया तथा परिव्रज्या के प्रतीक झोला व ब्रह्मदण्ड प्रदान कर भावभरी विदाई दी।

देशव्यापी देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञों के संचालन के लिए संदीप पाण्डेय, शशिकांत सिंह, परमेश्वर साहू, राजकुमार, बालरूप शर्मा, योगेश पटेल, विनय केसरी आदि के नेतृत्व में लगभग 10 टोलियाँ तत्काल रवाना हो गईं। कार्यक्रमों की माँग को देखते हुए लगभग पाँच और टोलियाँ शीघ्र ही रवाना हो रही हैं।

टोलियों के लिए पुनर्बोध प्रशिक्षण शिविर

देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञ संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से प्रस्थान कर रही टोलियों हेतु शान्तिकुञ्ज में पाँच दिवसीय पुनर्बोध प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। 21 से 25 फरवरी की तिथियों में सम्पन्न इस शिविर में तत्काल प्रस्थान कर रहे और आगामी दिनों में टोलियों में जाने वाले सभी कार्यकर्त्ताओं को कार्यक्रमों के उद्देश्य का पुनःस्मरण कराते हुए प्रशिक्षण दिया गया। शान्तिकुञ्ज के अलावा लगभग 11 राज्यों के आए 250 से अधिक प्राणवान परिव्राजकों ने इसमें भाग लिया।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने शिविर समापन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी राज्य व देश के कर्णधार संस्कृतिनिष्ठ, संवेदनशील युवा होते हैं। देव परिवार विस्तार गायत्री महायज्ञों के माध्यम से पूरे देश में आस्था संकट के निवारण तथा समाज में छायी विकृतियों को दूर कर लोगों को सकारात्मक सोच के साथ नए राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित किया जाएगा।

टोली पुनर्बोध प्रशिक्षण शिविर को शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा के अलावा डॉ. ओ.पी. शर्मा, प्रो विश्वप्रकाश त्रिपाठी, श्री केदार प्रसाद दुबे, प्रो. प्रमोद भटनागर, श्री परमानन्द द्विवेदी, श्री कैलाश महाजन, श्री योगेन्द्र गिरी जी, श्री नमोनारायण पाण्डेय आदि ने विविध विषयों पर संबोधित किया। कार्यक्रम विभाग प्रभारी श्री श्याम बिहारी दुबे और उनके विभागीय सहयोगियों ने शिविर का संयोजन-संचालन किया।

टोली प्रशिक्षण शिविर को सम्बोधित करते श्री महेन्द्र शर्मा जी

शान्तिकुञ्ज में निःशुल्क चिकित्सा शिविर

400 मरीजों ने लाभ लिया

शान्तिकुञ्ज में आयोजित शिविर में स्वास्थ्य परीक्षण करते चिकित्सक

शान्तिकुञ्ज स्थित श्रीराम शर्मा आचार्य शताब्दी चिकित्सालय में 27 फरवरी 2022 को निःशुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। इसमें चार सौ से अधिक मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें निःशुल्क दवाइयाँ दी गईं। शिविर में सेवाएँ प्रदान करने के लिए गाजियाबाद, नोएडा, दिल्ली, मुजफ्फरनगर से कई वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम शान्तिकुञ्ज आई थी। चिकित्सकों ने मरीजों को स्वास्थ्य की रक्षा तथा विभिन्न रोगों से लड़ने के सूत्र भी समझाये। मेडिकल कॉलेज मुजफ्फरनगर के डीन डॉ. मनीष अग्रवाल ने जीवन रक्षा में सहयोग सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक तौर-तरीकों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय पर इलाज मिलने से कइयों की जान बचाई जा सकती है।

जरूरतमंदों की सेवा ईश्वर की सच्ची आराधना है।
- श्रद्धेया शैल जीजी

- **हरिद्वार एवं शान्तिकुञ्ज के निकटवर्ती क्षेत्रों के लोग विशेष लाभान्वित हुए।**
- **चिकित्सकों ने स्वास्थ्य रक्षा एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के सूत्र भी समझाए।**

शिविर से पूर्व चिकित्सकों ने श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट कर आशीर्वाद लिया। श्रद्धेया जीजी ने चिकित्सा को आत्मिक उत्थान का अत्यंत महत्त्वपूर्ण साधन बताया। उन्होंने कहा कि जरूरतमंदों की सेवा ईश्वर के साकार रूप की उपासना ही है। इससे आत्मिक संतोष और आनन्द की गहन अनुभूतियाँ होती हैं। अगर भावना उदात्त हो तो चिकित्सा एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ इस तरह की सेवा का भरपूर अवसर है।

इस शिविर का पूरे हरिद्वार के और विशेष रूप से शान्तिकुञ्ज के समीपवर्ती क्षेत्र के लोगों ने लाभ लिया। वरिष्ठ विशेषज्ञों की सेवाएँ पाकर उन्होंने चिकित्सकों और शान्तिकुञ्ज के प्रति आभार व्यक्त किया।

शिविर के लिए सेवाएँ प्रदान करने वाले चिकित्सक

डॉ. युवराज शर्मा (अस्थिरोग), डॉ. अजय गोयल (त्वचा रोग), डॉ. शिखा गोयल, डॉ. आशीष अग्रवाल (हृदय रोग), डॉ. विदुषी शर्मा (स्त्रीरोग), डॉ. वीबी जिन्दल (हृदय रोग), डॉ. आशुतोष रावत, डॉ. छवि अरोरा (स्त्रीरोग), डॉ. महेश सिसोदिया (मेडीसिन), डॉ. सूर्यांशु ओझा (मेडीसिन), डॉ. आरसी गुप्ता (हृदय रोग), डॉ. बिन्दु अग्रवाल (रेडियोलॉजिस्ट) डॉ. सौरभ सिंह (नेत्र रोग), डॉ. मनीष अग्रवाल (बाल रोग), डॉ. अंकित रंजन, डॉ. प्रीति शर्मा आदि। इसके साथ श्रीराम शर्मा आचार्य शताब्दी चिकित्सालय के चिकित्सक एवं सहयोगी चिकित्साकर्मियों ने भी अपनी उदात्त सेवा भावना का परिचय दिया।

महाशिवरात्रि पर्व पर दे.सं.विश्वविद्यालय स्थित प्रज्ञेश्वर महादेव में रुद्राभिषेक

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी सहित हजारों श्रद्धालुओं ने शान्ति, स्वस्थ प्रगति और समृद्धि की प्रार्थना की

महाशिवरात्रि-1 मार्च 2022 की प्रातः अत्यंत मनोरम आध्यात्मिक वातावरण में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने रुद्राभिषेक किया। शान्तिकुञ्ज की संगीत टोली द्वारा रुद्राष्टक, महाकालाष्टक, प्रज्ञा भजन, आरती की शंख, सितार, घण्टा, घड़ियाल, मृदंग आदि वाद्यों के साथ ओजस्वी प्रस्तुतियाँ व पुरोहितों द्वारा लय-तालबद्ध पुरुष सूक्त आदि श्लोकोच्चारण ने साधकों की आत्मचेतना को आनन्द की अनुभूति के शिखर पर प्रतिष्ठित कर दिया।

श्रद्धेय डॉ. साहब ने अपने संदेश में कहा कि शिव की उपासना हमें सद्भाव और शुभ कर्मों के लिए प्रेरित करती है। यदि हम जीवन में शुभ कार्य करें, तब ही हम कल्याणकारी शिव के प्रिय बन सकेंगे। उन्होंने बुरी आदतों को छोड़ने, प्रतिकूलताओं में भी संतुलन बनाए रखने, सबके प्रति कल्याण का भाव रखने, विवेकपूर्वक सोचने, श्रेष्ठता के वरण के लिए दृढ़ संकल्पित होने जैसी सदाशिव की शिक्षाओं का वर्णन किया।

प्रज्ञेश्वर महादेव में सैकड़ों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में रुद्राभिषेक का कर्मकाण्ड श्री शिवप्रसाद मिश्र एवं श्री उदयकिशोर मिश्र की टोली ने कराया। शान्तिकुञ्ज के अंतेवासियों एवं देसंविवि के आचार्य-विद्यार्थियों द्वारा प्रज्ञेश्वर महादेव की पूजा, वंदना, स्तुति, जप-तप का क्रम देर सायंकाल तक चलता रहा। धर्म विज्ञान के विद्यार्थियों ने देसंविवि स्थित सिद्धेश्वर महादेव में रुद्राभिषेक किया। परिव्राजक श्री राकेश गुप्ता द्वारा भी सिद्धेश्वर महादेव में पूरे विधि-विधान के साथ रुद्राभिषेक कराया गया।

श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में रुद्राभिषेक करते हुए, दायें संचालक पुरोहित व श्रद्धालुगण

सदाशिव का संदेश

भगवान भोलेनाथ का जीवन हमें लोभ, मोह, अहंकार, वासना, तृष्णा से दूर रहकर मन और भावनाओं में वैराग्य धारण करने, सादगीपूर्वक जीवन जीने, अविचल, दृढ़ निश्चयपूर्वक श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने तथा परमार्थ परायण जीवन जीते हुए सदा प्रफुल्लित रहने की प्रेरणा देता है।

- श्रद्धेया शैल जीजी

शान्तिकुञ्ज में सायंकाल सत्संग भवन में शिवार्चन का प्रेरणाप्रद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सैकड़ों शिविरार्थियों ने इसमें भाग लिया। इसके साथ ही महाकाल मंदिर एवं सप्तऋषि क्षेत्र स्थित ऋषि प्रतिमाओं के समक्ष बैठकर अनेक दम्पतियों ने रुद्राभिषेक किया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.3.2022
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23